देवनाथ द्विवेदी

लखनऊ
मो. 9919899827

ढूंढते जिनको आसमानों में
वो परिंदे नहीं उड़ानों में

बेच दी जिसने इज्जत ओ गैरत
अब वो बिकता है खुद दुकानों में

दोस्ती के उसूल जो भूले
नाम उनके लिखो बेगानों में

ग़ज़ल के शे'र कब पढ़े जाते
मुट्ठियाँ कस गयीं उनवानों में

खौफ की गश्त हुई गलियों में
लोग दुबके रहे मकानों में

❖❖❖

ख्यालों में ढल गए कभी अनुमानों में
कभी ढले वो गीत, सुरों में, तानों में

उनकी हर जुम्बिश पर लम्बे चर्चे हैं
रुकतीं कब ये बातें किन्हीं ठिकानों में

निकले वो जब भी गर्दन में खम डाले
हलचल मची इधर उनके दीवानों में

एक हंसी पर उनके कई निसार हुए
कई उठे तो जा बैठे मयखानों में

ठहरे जहां, उगे सतरंगे इन्द्रधनुष
चले तो उतरी अल्हड़ नदी ढलानों में

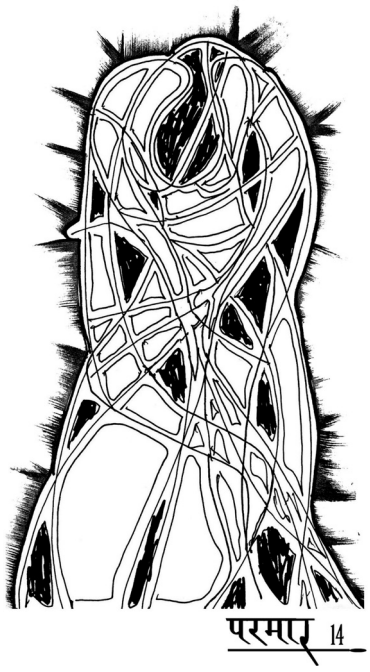

उनकी आंखें शमादान सी रोशन हैं
चलो हमारा नाम लिखो परवानों में

❖❖❖

संशय, दुविधा और वही प्रतिवाद रहे
मुद्दे जो थे, जैसे थे, आबाद रहे

बक्सों से आधुनिक मशीनी बटनों तक
वहीं व्यथाएं, कुंठाएं ,अवसाद रहे

संविधान कठपुतली उनके हाथों की
साजिश के मोहरे जिनके नाबाद रहे

आकाओं की नस्ल नहीं बदली चाहे
दिल्ली में वो रहे , दौलताबाद रहे

मतभेदों की फसलों से मिलता भी क्या !
जितने दाने मिले सभी बेस्वाद मिले

ढलते गए विसंगतियों में कई मगर
मेरी तरह कई हैं जो अपवाद रहे ❖